B.Ed – 1st Year **Nakul Sah**

Gender, School and Society **Assistant Professor**

Course- 6

Lecture – 26

Suggestion to reduce gender biases from textbooks
पाठ्यपुस्तकों से लिंगीय पक्षपात को कम करने के लिये सुझाव

पाठ्यक्रमों व पाठ्यपुस्तकों से जेण्डर पक्षपात को कम करने के लिये निम्नलिखित सुझाव हैं:

1. शैक्षिक सामग्री का उत्पादन संविधान में निहित भावनाा तथा मौलिक अधिकार एवं समानता के अनुरूप होना चाहिए।

2.पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों में वहां संशोधन करने की आवश्यकता है जहां महिलाओं को चित्रण केवल अच्छी गृहणियों की तरह किया गया है। पुरूषों के समान महिलाओं की उपलब्धि को शामिल करने की आवश्यकता है यह भी किया जा सकता है कि पिता खाना बना रहा है, माता बल्ब लगा रहीं है, लड़की स्कूल से साईकिल पर लौट रही है तथा लडका झाडू लगा रहा है।

3.पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें एक लिंगीय समिति जिसमें अकादमिक, नारीवाद, इतिहासकार, सरकार आदि शामिल हो, जिससे पाठ्यक्रम की गुणवत्ता एवं यह सुनिश्चित हो जाये कि पाठ्यपुस्तकें लिंग भेद से मुक्त है।

4. बालिकाओं के स्थान के बारे में सतही सोच लिखने के बजाए लेखकों को परिवार में बालिकाओं की वास्तविक स्थिति को महससू करके लिखना चाहिए।

5. आज बहुत कम महिलाओं की आत्मकथा पढ़ाई जाती है, क्योंकि महिलाओं की आत्मकथाएं कम सख्या में निर्मित हैं इनकी संख्या बढ़ा कर बालिकाओं को प्रेरित किया जा सकता है।

6. पाठ्यपुस्तकों के उत्पादन को एक साधारण क्रिया की तरह नहीं लिया जाना चाहिए बल्कि इस पर राज्य सरकार का पर्यवेक्षण तथा नियंत्रण होना चाहिए।

7. लिंग भेद को दर्शाने वाली शिक्षण सामाग्री को परिवर्तित कर देना चाहिए।

8. कला, सगीत, गृह विज्ञान आदि महिलाओं के विषय जबकि भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित आदि विषयों को पुरूषों से संबधित माना जाता था। उसमें परिवर्तन करना।

9. शिक्षक/शिक्षिका लडके़ एवं लड़कियों के मध्य स्वथ्य अंतःक्रिया को प्रोत्साहित करें।

10. विद्यार्थियों को समूह आधिन्यास दिया जाए तथा लडके़ एवं लड़कियों को समूह में कार्य करने के लिए प्रेरित करें।

11. कक्षा में कार्यों का बँटवारा लड़के एवं लड़कियों के मध्य समान रूप से होना चाहिए।

12. यदि एक लड़का व लड़की बात करते है अथवा अंतः क्रिया करते हैं तो उस पर कोई नकारात्मक शाब्दिक टिप्पणी न किया जाए तथा उसे तथाकथित बुरे काम की श्रेणी से बाहर निकालकर देखा जाए।

13. यदि हमें विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करना है तो आवश्यक है उसके अंदर के समस्त गुणों का विकास किया जाए न कि गुणों का लिंग स्त्रियोचित एवं पुरूषोचित के आधार पर बटवारा करके आधा–आधा इसांन बनाया जाए।

14. शिक्षक को कक्षा में हमेशा जेंडर तटस्थ शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

15. अपने समुदायों में लिंग पक्षपात और महिलाओं के प्रति हिंसा पर बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करना।

16. पुरूष और महिलाएं दोनों परिवार के फैसलों में बराबर भूमिका निभाएं

17. पुरूष और महिलाएं दोनों सामुदायिक फैसलों में भी शामिल हो।

18. एक सकारात्मक वातावरण तैयार करना और समुदाय के प्रभावशाली लोगों को इस अभिप्राय में शामिल करना।

19. लोगों के मन में यह सोच विकसित करना कि महिला पुरूष की जीवनसाथी के रूप में निजी एवं सार्वजनिक जीवन में एक समान है।

20. लैंगिक असमानता समाप्त करने या कम करने के लिए छोटी–छोटी कोशिशों द्वारा एक बदलाव लाने का प्रयास कर सकते हैं।

21. लडक़े और लड़कियों, महिलाओं एवं पुरूषों को समान पोषण स्वास्थ्य सवेाएं, शिक्षा, रोजी रोटी, कमाने एवं विकास को समान अवसर मिलें।

22. कानूनी समानता के लिए राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयत्न किये जायें।

23. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरूषों एवं महिलाओं के लिए आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में अवसर बढ़ाने के लिए प्रयत्न किये जायें।

★★★★★